RNI N. UPHIN/2013/51197

ISSN: 2278-0084

वाङ्मयम्

THE HALF YEARLY RESEARCH JOURNAL OF
SANSKRIT LITERATURE

षाण्मासिकी संस्कृतशोधपत्रिका

जून, २०१६
अङ्क-१०

त्रिवेणिका संस्कृत परिषद्
इलाहाबाद

Scanned with CamScanner

विषयानुक्रम

क्रम	विषय	लेखक	पृष्ठ
१.	आचार्य भट्टनायक का काव्यशास्त्र को योगदान	प्रो० सुरेशचन्द्र पाण्डे	१
२.	डॉ० भीमराव अम्बेडकर का 'मूकनायक' एवं संस्कृत में दलित का प्रातिनिध्य	प्रो० गोपबन्धु मिश्र	७
३.	प्राच्य व्याकरण की आधुनिक परम्परा	डॉ० उर्मिला श्रीवास्तव	१४
४.	रामायण के उत्तरकाण्ड में दिव्य पात्रों का दिग्दर्शन	विकास शास्त्री	२१
५.	नैतिक शिक्षा और समाज : एक आथर्वण दृष्टि	डॉ० प्रयाग नारायण मिश्र	३४
६.	अथर्ववेदीय दाम्पत्य जीवन की वर्तमान प्रासङ्गिकता	डॉ० विजयशङ्कर द्विवेदी	४०
७.	पौराणिक साहित्य में पुत्र और उसके प्रकार	डॉ० मीनू अग्रवाल	४४
८.	वैदिक चिकित्सा	डॉ० सञ्जय कुमार	४९
९.	गीता के अनुसार जीवात्मा	डॉ० लता देवी	६०
१०.	'राघवेन्द्रचरितम्' महाकाव्य का कला एवं भाव पक्ष	डॉ० तरुण कुमार शर्मा	६५
११.	प्रबन्धचिन्तामणि - एक सांस्कृतिक अध्ययन	डॉ० सुम्बुला फिरदौस	७१
१२.	जातकमाला के प्रधान पात्र बोधिसत्त्व	डॉ० दीप्ति विष्णु	७८
१३.	पर्यावरण प्रदूषण के सापेक्ष आर्षचिन्तन विमर्श	डॉ० आशा श्रीवास्तव	८३
१४.	ऋग्वेद एवं रघुवंश महाकाव्य में इन्द्र का स्वरूप	डॉ० सुमन दुबे	८७
१५.	पाश्चात्य साहित्य में ध्वनितत्त्व	डॉ० आकांक्षा सिंह	९२
१६.	लोककल्याण हेतु औपनिषद सत्तत्त्व की प्रासङ्गिकता	डॉ० पूर्णेन्दु सिंह	९४
१७.	वास्तुशास्त्र में भूमि परीक्षण विधि	विपिन कुमार मौर्या	१००
१८.	नाट्यशास्त्रीय दृष्टि से नायक का स्वरूप एवं भेद	डॉ० सुनीता	१०६
१९.	वाल्मीकि रामायण में कर्मफल की अवधारणा	डॉ० नीलम सिंह	११२
२०.	स्वप्नवासवदत्तम् में नारी :एक विहङ्गम दृष्टि	पूजा जायसवाल	११५
२१.	योग दर्शन में योगाङ्ग का स्वरूप	रेखामल्ल	१२०
२२.	उपनिषदों में प्रतिपादित परमसत्ता विषयक अवधारणा	अनुज कुमार निर्मल	१२४
२३.	ब्रह्मविषयक विचार : अद्वैतवेदान्त के आलोक में	श्याम शङ्कर	१३१
२४.	Jñāna-yoga in Bhagawad-Gītā	Dr. Vimalesh Kumar Thakur	१३६
२५.	क्षेमेन्द्रसाहित्यनिरूपितशिक्षाव्यवस्थाया उपादेयत्वम्	डॉ० विजयकुमारकर्ण:	१४३

Scanned with CamScanner

वैदिक चिकित्सा

डॉ० सञ्जय कुमार*

वेद भारतीय ज्ञान-विज्ञान का मूल आधार स्रोत है। वह मानवीय संस्कृति का प्रथम प्रकाशन है। इससे सम्पूर्ण शास्त्र पल्लवित एवं पुष्पित हुए हैं। वेदों का ज्ञान ही मानव जाति को सुख व शान्ति प्रदान करने वाला मार्ग है, जहाँ आध्यात्मिक जीवन के साथ-साथ हमारा भौतिक जीवन कैसे सुसंस्कृत और स्वस्थ बने, इस विषय में गंभीर मीमांसा की गई है। वस्तुत: जब तक मनुष्य अपने भौतिक जीवन से संतुष्ट नहीं होता है तब तक वह आध्यात्मिक जीवन की ओर उन्मुख नहीं हो पाता है। इच्छाओं के निरोध से मनुष्य की चित्तवृत्ति संतुष्ट होती है लेकिन शारीरिक अनामयता, दुर्बलता, रक्ताल्पता, व्रण इत्यादि के प्रति वह चिकित्सा के द्वारा ही संतुष्ट हो पाता है। इस प्रकार मानसिक एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ मनुष्य ही अध्यात्म का अधिकारी सिद्ध होता है।

चिकित्सा का अर्थ औषध सेवन करना, औषधोपचार करना है। वस्तुत: आयु विषयक ज्ञान कराने वाले शास्त्र को ही आयुर्वेद कहा जाता है। इसीलिए महर्षि चरक लिखते हैं-

हिताहितं सुखं दुःखमायुस्तस्य हिताहितम्।
मानं च तच्च यत्रोक्तमायुर्वेदः स उच्चते।।[1]

अर्थात् जिस शास्त्र में हितकर आयु, अहितकर आयु, सुखी-आयु एवं दुःखी-आयु का वर्णन हो तथा आयु के हित एवं अहित आहार-विहार व औषंध का वर्णन हो और आयु का मान बतलाया गया हो उसे आयुर्वेद कहते हैं। इतना ही नहीं वरन् **मानं च** अर्थात् अल्पायु, दीर्घायु एवं मध्यायु का ज्ञान करने वाले शास्त्र को आयुर्वेद कहा गया है। आयु के लिए शरीर, इन्द्रिय, मन एवं आत्मा का प्रकृतिस्थ होना परमावश्यक माना गया है। इन्हें प्रकृतिस्थ होने की विधि हमें चिकित्साशास्त्र ही बतलाता है। जिसका उपदेश हमें वेदों से ही प्राप्त होता है, जहाँ पदे-पदे शरीर-इन्द्रिय-मन एवं आत्मा के स्वरूप को संयमित करने की बात की गई है। अथर्ववेद भेषज अर्थात् भिषग्वेद के लिए प्रसिद्ध है। महर्षिचरक और महर्षिसुश्रुत ने आयुर्वेद को अथर्ववेद का उपाङ्ग बताया है।[2] जिससे विदित होता है कि आयुर्वेद की सुदृढ़ परम्परा का विकास अथर्ववेद से ही प्रारम्भ हुआ है।

यद्यपि आयुर्वेद की विशिष्ट परम्परा अथर्ववेद से प्रारम्भ मानी जाती है। लेकिन इसके उद्भव का प्रमाण ऋग्वेद से ही मिलने लगते हैं। इन प्रमाणों का यहाँ मात्र उल्लेख ही नहीं होता है बल्कि उनके विधिवत् क्रियान्वयन के सूत्र भी दिये गये हैं। जिसके आधार पर एक बृहद् चिकित्सा पद्धति का पता चलता है। यहाँ अश्विनद्वय की विचित्र शल्यक्रिया का दृष्टान्त भारतीय चिकित्सा शास्त्र के लिए बहुत ही

*असि०प्रोफेसर, संस्कृत-विभाग, डॉ० हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, म०प्र०

Scanned with CamScanner